Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५/१६० ३७,६५१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या 98/180 .....आगत संख्या 36.4.87

पुस्तक – वितरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित २०वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा १० पैसे के हिसाब से विलम्ब - दण्ड लगेगा।

16 FEB 1989

Stock Verification 2004

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Stock Verification-2024

Stock Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या 94/280
पुस्तक संख्या
आगत पञ्जिका संख्या 34,848

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

वेद

और

संसार के मत मतांतर

एक बार अवश्य ही पढ़िये

❀ लेखक ❀

पं० सुरेन्द्र शर्म्मा

विद्याभूषण

काव्यतीर्थ साहित्योपाध्याय

● आर्य्योपदेशक ●

१५—२—२५ ई०

प्रथम वार
२०००

मूल्य
=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

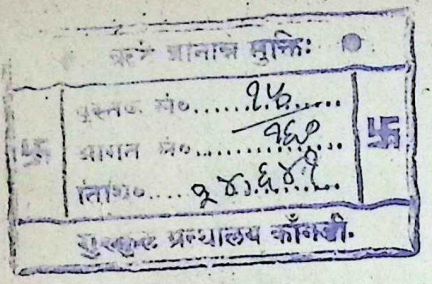

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वेद और संसार के मत मतान्तर"

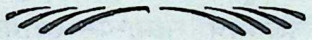

प्रथम भाग

प्यारे मित्र जनो! यद्यपि यह विषय बड़ा ही कठिन है परन्तु फिर भी इस विषय में जो कुछ भी मैंने विचार संग्रह किये हैं उनको आपकी सेवा में प्रकट कर देना उचित समझता हूं। मुझे आशा है कि मेरे इस तुच्छ परिश्रम से अवश्य ही आपको थोड़ा बहुत लाभ पहुंचेगा।

संसार भर में जितने भी मत मतान्तर हैं उनका ठीक २ पता तथा हाल मालूम कर लेना तोबड़ा ही दुस्तर है लेकिन फिर भी जितनों का हाल मालूम किया जा सका है उन सब में से कई मत ऐसे भी हैं कि जिन को उनके अनुयायी "ईश्वरीय ज्ञान" (इलहामी) मान बैठे हैं।

इस लेख में मैंने थोड़े से मत मतान्तरों के नाम बतलाते हुए इनका आधुनिक सांसारिक मनुष्यों के द्वारा प्रकट होना सिद्ध करके—यह बतलाने का प्रयत्न किया है कि इन मत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मतान्तरों में कोई भी ऐसा नहीं है कि जो "ईश्वरीय ज्ञान" (इलहामी) सिद्ध हो सके।

"ईश्वरीय ज्ञान" (इलहामी) केवल वेद ही है। जीव के स्वाभाविक ज्ञान से बढ़ कर जो कुछ संसार में ज्ञान विज्ञान आदि हैं सब का मूल एक मात्र वेद ही है। बिना वेद के (इलहाम के) केवल मात्र सामान्य—स्वाभाविक ज्ञान मात्र से कोई भी मनुष्य किसी प्रकार की भी उन्नति नहीं कर सकता है। इस बात को अनेक विचार शील विद्वानों ने नाना प्रकार की विधियों से सिद्ध किया है। और अनुभव भी यही बतलाता है कि मनुष्य को यदि माता—पिता आदि से पृथक कर दिया जावे तो वह युवा या वृद्धावस्था तक में भी सामान्य व्यवहारिक ज्ञान से भी शून्य होगा।

एक साधारण सा यन्त्रकर्त्ता भी जिस यन्त्र का आविष्कार करता है साथ में उस यन्त्र के यह भी संसार को प्रकट कर देता है कि इस यन्त्र के अमुक २ गुण एवं लाभ हैं और इसके व्यवहार में लाने की अमुक विधि है। यदि कोई विशेष यन्त्रकर्त्ता, यन्त्र तो बनादे परन्तु उस के गुण और उस के (इस्तेमाल) व्यवहार विधि न बतावे तो वह यन्त्र संसार में प्रसिद्ध न हो सकेगा और उस लाभदायक यन्त्र से संसार को कोई लाभ भी नहीं पहुंच सकेगा।

जैसे घड़ी ही को देखिये। जिन विद्वानों ने इस यन्त्र को बनाया है उन्होंने घड़ी के साथ में घड़ी के गुण लाभ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका व्यवहारिक ज्ञान भी संसार को बता दिया है। आज इस घड़ी यन्त्र को देखिये कि इसका कितना बड़ा—विस्तृत साम्राज्य भू भाग पर फैला हुआ है।

परन्तु इतना होने पर भी बहुत से मनुष्य अब भी ऐसे हैं कि जिन को इस घड़ी के व्यवहार का कुछ भी ज्ञान नहीं है और वे इसी कारण इस यन्त्र (घड़ी) से कोई लाभ भी नहीं उठा सकते हैं।

उस विज्ञान वेत्ता—विद्वान् को संसार मूर्खों में ही गिनेगा, जिस ने कि (मशीन) यंत्र तो बहुत ही उत्तम बना दिया परन्तु उसके गुण लाभ और व्यवहारिक विधि को संसार के सामने न रक्खा हो।

परमात्मा ज्ञान—विज्ञान का केन्द्र है। सर्वज्ञ, सर्वव्यापक आदि गुण युक्त हैं और उसी ने इस चराचर विश्व को निर्माण किया हुआ है, तो फिर वह ईश्वर अपना ज्ञान मनुष्य के कल्याणार्थ क्यों न देता?

यजुर्वेद अ० ३१ में सृष्टि उत्पत्ति का वर्णन है।

वेद ने बताया है कि सम्पूर्ण विश्व उसी परमात्मा से उत्पन्न होता है। आस्तिक वादी सब यही कहते हैं और कहेंगे भी कि परमात्मा ही सब संसार का कर्त्ता, धर्त्ता और संहर्त्ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी दशा में यह स्वाभाविक ही प्रश्न उठ खड़ा होता है कि जिस परमात्मा ने इस विचित्र-सूर्य-चन्द्रादिक युक्त विश्व को बनाया है वह किस प्रकार का होगा ? वेद ने जिस ईश्वर से सृष्टि की उत्पत्ति कही है उसके विषय में वेद क्या कहता है यदि यह पूछा जाय तो हमें इस पर अवश्य ही कुछ न कुछ कहना होगा। ईश्वर कैसा है ? उसके गुण कर्म स्वभावादि कैसे हैं ? ईश्वर कितने हैं ? ईश्वर कहां रहता और क्या करता है ? इस प्रकार के सब ही प्रश्नों का समाधान वेद स्वयं इस प्रकार से करता है कि जहां कोई भी प्रश्न शेष नहीं रह जाता।

"वेद में ईश्वर का स्वरूप"

"ओ३म्—स पर्यागाच्छुक्र मकाय मव्रण मस्नाविरꣳ शुद्धमपाप विद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथा तथ्य तोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥ यजु० ४०। ८॥

अर्थ = ओ३म् = सर्व रक्षक (परमात्मा) सः = वह (ईश्वर) (परि अगात्, = सब ओर से व्याप्त है। (सर्व व्यापक है) (शुक्रम्) = स्वर्तिपादक (सब का उत्पन्न करने वाला) अकायम् = शरीर रहित (निराकार) अव्रणम् = छिद्र रहित अस्नाविरम् = नस नाड़ियों से रहित। शुद्धम् = पवित्र। अपाप विद्धम् = पाप रहित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविः = क्रान्त दर्शी (सर्वज्ञ)। मनीषी = मन का साक्षी। परिभूः = सब का अध्यक्ष। स्वयम्भूः = कारण रहित (है) (उसपरमात्माने) शाश्वतीभ्यः = निरन्तर। समाभ्यः = वर्षों के लिये। याथातथ्यतः = ठीक २। अर्थान् = पदार्थों को। व्यदधात् = रचा है (बनाया है)

इसी प्रकार अथर्व वेद काण्ड १३ अ० ४ सू० २ मन्त्र १६ व १७ में भी लिखा है। इस प्रकार के अनेक शः वेद मन्त्र हैं जिनमें कि परमात्मा के स्वरूप का भलि भांति वर्णन किया गया है। । भावार्थ में कथन यही है कि जब ईश्वर ने सब सृष्टि को रच दिया और मनुष्यों को उत्पन्न किया तो मनुष्यों को परमात्मा ने ज्ञान भी दिया है। उसी ज्ञान का नाम ईश्वरीय ज्ञान या इलहाम है। जैसे संसार उस ईश्वर से उत्पन्न हुआ है इसी प्रकार से प्रत्येक प्रकार का ज्ञान, विज्ञान, विद्या आदि भी उसी से प्रकट होता है। जैसा कि यजुर्वेद अ० ३१ मं० ७ में वर्णन किया गया है। ऐसा ही ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में भी है। इसी प्रकार लेख, प्रमाण, युक्ति और प्रत्यक्ष में अनुभव आदि प्रत्येक प्रकार से सिद्ध है कि जीव परमात्मा के दिये हुए विशेष ज्ञान से ही उन्नति कर सकता है और परमात्मा के दिये हुए ज्ञान (विवेक) का ही नाम दूसरे शब्दों में लोग "इलहाम" कहते हैं। जो भी परमात्मा को सत्ता मानते हैं वे सब यह मानेंगे और मानते हैं कि इलहाम का होना अत्यावश्क है परन्तु झगड़ा इतना रह जाता है कि बहुत से लोगों ने (इलहाम) ईश्वरीय ज्ञान के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझने में बड़ी भारी ग़लती खाई हुई है और इसी कारण आज संसार में उन जातियों में (मनुष्यों) में सदा झगड़ा बना रहता है कि जो आस्तिक ईश्वर सत्ता और ईश्वरीय ज्ञान (इलहाम) को मानने वाले हैं। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का उत्पादक, रक्षक, धाता, संहर्त्ता और अधीश्वर परमात्मा एक ही है। इस बात में किसी भी मत मतान्तर के अनुयायी को कोई शक और किसी प्रकार का भी कोई हद्द (हुज्जत) नहीं है परन्तु फिर भी लोग अधिकतर परमात्मा और परमात्मा के ज्ञान (इलहाम) पर ही सदा लड़ते झगड़ते रहते हैं। परमात्मा के एक होने का विश्वास रखने वालों में इस लड़ाई झगड़े का हमें तो बहुत कुछ विचार करने पर केवल एक ही कारण दृष्टिगत आता है और वह यह है कि लोगों ने ईश्वरीय ज्ञान के (इलहाम) के समझने में बड़ी भारी ग़लती खाई हुई है। अतः यह परमावश्यक है कि सब से पहिले हम ईश्वरीय ज्ञान (इलहाम) को वास्तव में समझ लेने का भर सक यत्न करें। हमारे शास्त्रकारों ने प्रत्येक वस्तु के वास्तविक स्वरूप को जानने के लिये एक कसौटी बनादी है कि जिस से प्रत्येक वस्तु निर्भ्रम जानी जासके। वह कसौटी लक्षण और प्रमाण की है। अर्थात् प्रत्येक वस्तु लक्षण और प्रमाण के द्वारा ही ठीक २ जानी जासकती है। अत एव ऋषियों ने यह कहा है कि "लक्षण प्रमाणाभ्यां वस्तु सिद्धिः"

इस लिये आप के सामने सब से पहिले ईश्वरीय ज्ञान (इलहाम) के लक्षण लिखे जाते हैं। इस लक्षण की कसौटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोहाथ में लेकर आप संसार के प्रत्येक मत मतान्तर को रगड़ कर देखिये और यह पता लगाइये कि वास्तव में ईश्वरीय ज्ञान (इलहाम) कौनसा है।

"ईश्वरीय ज्ञान (इलहाम) के लक्षण"

(१) ईश्वरीय ज्ञान (इलहाम) का आदि सृष्टि में प्रकट होना अत्यावश्यक है।

(२) ईश्वरीय ज्ञान किसी देश या जाति विशेष की भाषा में प्रकट न होना चाहिये।

(३) ईश्वरीय ज्ञान में किसी जाति या देश तथा व्यक्ति विशेष का कोई इतिवृत्त = इतिहास न होना चाहिये।

(४) ईश्वरीय ज्ञान में कोई बात सृष्टि नियम से विरुद्ध न होना चाहिये।

(५) ईश्वरीय ज्ञान में व्याघात न होना चाहिये अर्थात् पूर्वापर विरोध न हो।

(६ ईश्वरीय ज्ञान में पुनरुक्ति दोष न होना चाहिये।

(७) ईश्वरीय ज्ञान में कोई बात मिथ्या (झूठ) न होनी चाहिये क्योंकि ईश्वर परि पूर्ण तथा सर्वज्ञ है।

(८) ईश्वरीय ज्ञान में जीव की उन्नति के लिये सब आवश्यक ज्ञान और विद्याओं का होना अत्यावश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह ईश्वरीय ज्ञान का लक्षण है। अब यह आप का काम है कि इस लक्षण की कसौटी से संसार के प्रत्येक मतमतांतर को रगड़ कर भलि भांति परीक्षा करलें और इस लक्षण से युक्त संसार में जो भी पुस्तक (धर्म) हो निःसन्देह आप उस को ही सर्व मान्य ईश्वरीय ज्ञान, ईश्वरोक्त धर्म समझिये और अपने आप को प्रत्येक प्रकार से निर्भय-निशङ्क होकर उस ही धर्म का अनुयायी बना कर उभयोन्नति (सांसारिक उन्नति और पारमार्थिक मुक्ति तक की उन्नति) को प्राप्त कीजिये। जहां तक विचार किया गया है। यही निश्चय किया जासका है कि उपरोक्त लक्षणों से युक्त संसार में एक मात्र केवल—

"वेद ही ईश्वरीय ज्ञान की सर्व माननीय सुन्दर रचना है"

प्रश्न—ईश्वरीयज्ञान आदि सृष्टि में ही प्रकट हो यह लक्षण अनुचित और अनावश्यक है। परमात्मा जब चाहे तब अपना ज्ञान भेज सकता है उसके लिये उसको कोई रोक टोक नहीं हो सकती। जैसे राजा लोक यथाआवश्यक समय २ पर कई आवश्यक पुराने कानूनों को रद्द करके नये कानून बना लेते हैं, इसी प्रकार परमात्मा भी समय २ पर अपना ज्ञान भेज सकता है। क्या कोई राज्य और राजा ऐसा भी है। या सुना गया है कि जिस ने प्रजा के प्रबन्धार्थ सदा एक बार के बनाये हुए ही कानून से काम करता रहता हो ? प्रजा में कई प्रकार के नूतन उपद्रव हो जाने पर उनको मिटाने के लिये राजा को निःसंदेह कोई न कोई नया उपाय (कानून) बनाना ही पड़ता है। इसी प्रकार परमात्मा भी यथावश्यक समय २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अपना ज्ञान [कानून] संसार में भेजता रहता है अतः यह कोई आवश्यक नहीं है कि परमात्मा का ज्ञान (इलहाम) आदि सृष्टि में ही प्रकट हो और बीच की सृष्टि (दशा) में न हो।

उत्तर—परमात्मा का ज्ञान (इलहाम) आदि सृष्टि में ही प्रकट होना सर्वथा उचित और परमावश्यक है। परमात्मा के सब काम नियमानुसार होते हैं। यदि आदि सृष्टि में ही परमात्मा अपना ज्ञान मनुष्यों को न देता तो मनुष्यों को सांसारिक पदार्थों का व्यवहारिक शुभाशुभ विशेष परिज्ञान न होता। अतः परमात्मा ने अपना ज्ञान दिया और वह ज्ञान परिपूर्ण होने के कारण उस में किसी भी प्रकार के परिवर्त्तन की आवश्यकता नहीं रहती। राजा लोग समय२ पर नये कानून क्यों बनाते हैं? इस लिये कि वे स्वल्प-परिमित ज्ञान वाले होते हैं और इस लिये वे जो भी कानून बनायेंगे वे निर्भ्रम तथा परिपूर्ण न होंगे। राजा के या मनुष्य के ज्ञान तथा अनुभव में बहुत कुछ त्रुटि (कमी) होती है। इस लिये वे साल दोसाल या १-२ मासका तो क्या बल्कि यह भी नहीं जानते हैं कि कल को या कुछ ही समय बाद क्या होगा? परन्तु परमात्मा के विषय में यह त्रुटि नहीं कही जासकती है। परमात्मा ने इस सृष्टि में (इस कल्प) में भी वे ही सब पदार्थ रचे हैं जो कि पहिले कल्प में थे। संसार के पदार्थ तथा भोक्ता जीवादि सब सृष्टि पूर्ववत् है। परमात्मा इस का पूर्ण ज्ञाता है। अतः उसका ज्ञान परिपूर्णहोने के कारण परिवर्तन की भी आवश्यकता नहीं रखता। परमात्मा की रचना में कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी अन्तर नहीं आता है, जैसे आदि सृष्टि में नेत्र, श्रोत्र, जिह्वा हाथ, पैर, तथा सूर्य्य, चन्द्रादि पदार्थ जैसे २ गुण वाले थे आज भी वे वैसे ही हैं । इन के गुण तथा व्यवहार में किसी भी प्रकार का कोई भेद, अन्तर नहीं आया है । क्या कोई कह सकता है कि पहले लोग आंख से देखते थे परन्तु अब सुनने का काम आंख से और देखने का काम कान से करते हैं ? फिर इन के विशेष व्यवहारिक ज्ञान में परिवर्तन होने को क्या आवश्यकता हो सकती है । सारांश में इतना ही कहना बहुत होगा कि जो पदार्थ (द्रव्य) जैसा स्वाभाविक गुण रखता है वैसा ही गुण उसके जीवन भर में बना रहता है। जैसे अग्नि में दाहक और प्रकाश गुण है तो जब तक संसार में अग्नि रहेगी तब तक उसका गुण दाह और प्रकाश भी बिना किसी परिवर्तन के बना रहेगा । द्रव्य के परिवर्तन होने पर ही उसके गुण तथा व्यवहारिक ज्ञान में परिवर्तन को आवशयकता होती है । क्योंकि परमात्मा सर्वज्ञ तथा एक रस है । परमात्मा में कभी कोई भी परिवर्त्तन आजतक नहीं हुआ फिर उसके ज्ञान (वेद) में (इलहाल में) परिवर्तन हो ही कैसे सकता है ? परिवर्त्तन किसी कमी में ही हुआ करता है और परमात्मा तथा उस का ज्ञान परिपूर्ण है । अतः सिद्ध हुआ कि ईश्वरीय ज्ञान में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता । जो वेद (ईश्वरीयज्ञान) आदि सृष्टि में प्रकट हुआ है उसके परिपूर्ण होने से बीच की हालत में प्रकट होना सर्वथा ही अनावश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न = ईश्वरीय ज्ञान के लक्षण में जो यह कहा गया है कि वह किसी देश की भाषा में न हो सो इसका क्या प्रयोजन है ?

उत्तर = इसका मतलब यह है कि आदि सृष्टि में जो मनुष्य उत्पन्न हुए उनके माता पिता न थे। उन्हें परमात्मा ने स्वसामर्थ्य से अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न किया है। अतः उनको भाषा भी परमात्मा ने प्रदान की है। जब मनुष्य थे ही नहीं तो मनुष्य भाषा कहाँ से आती ? देश या जाति की भाषा संसार के बीच या बनने के कुछ समय बाद ही हो सकती है। शुरू में नहीं। मनुष्य को जो भाषा सिखाई जायेगी वही बोलेगा। परन्तु यह भी अत्यावश्यक है कि बिना भाषा के मनुष्य उन्नति तथा व्यवहार नहीं कर सकता है अतः मनुष्य के कल्याणार्थ परमात्मा ने भाषा भी दी है।

इस लिये वेद (ईश्वरीय ज्ञान) किसी देश भाषा में न हो के परमात्मा प्रदत्त भाषा में ही हो सकता है। अतः यह लक्षण ठीक है कि वेद (इलहाम) किसी देश की भाषा में न हो। जो बात किसी देश भाषा में होती है वह निश्चय करके ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो सकती, किन्तु उस देश के निवासी किसी मनुष्य की ही बनाई या लिखी हो सकती है। जैसे कि कुरानशरीफ़ और इञ्जील आदि पुस्तकें देश भाषा में होने से मनुष्य कृत ही सिद्ध हैं।

+ (नोट) (इस विषय में अक्षर विज्ञान पुस्तक देखनी चाहिये जो श्री पं० रघुनन्द जी शर्म्मा की लिखी हुई बम्बई से मिल सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न = ईश्वरीय ज्ञान में इतिहास न हो ऐसा कहना मिथ्या है और न ऐसा लक्षण ही ठीक है क्यों कि जिन वेदों को तुम ईश्वरीय ज्ञान कहते हो उनमें भी इतिहास है और परमात्मा की रचना में तो इतिहास अवश्य ही होना चाहिये। क्यों कि परमात्मा परिपूर्ण व सर्वज्ञ होने से उसकी रचना में जो कुछ भी होगा सब ही सत्य होगा। यदि कोई इतिहास परमात्मा की ओर से लिखा जायेगा तो वह अवश्य ही निर्भ्रम तथा माननीय होगा। अतः ईश्वरीय ज्ञान में इतिहास का न होना चाहिये। यह ठीक नहीं है।

उत्तर = महाशय! आप की शङ्का निर्मूल है। क्यों कि आदि सृष्टि में जब तक कोई घटना हुई हो न हो तो उस समय में प्रकट हुए ईश्वरीय ज्ञान में किसी का इतिहास हो ही कैसे सकता है? इतिहास पीछे ही से हो सकता है शुरू में नहीं। वेदों में इतिहास है यह कहना भी भ्रम मात्र है। लोग वेद की परिभाषा को न समझ कर ही वेदों में आये हुए अलङ्कारों को इतिहास समझ बैठे हैं। वेदों में इतिहास नहीं है। घटित घटना को लिख कर याद रखना अल्पज्ञ जीवों का काम है। परमात्मा का नहीं।

प्रश्न = ईश्वरीय ज्ञान में कोई बात सृष्टि विरुद्ध न हो सो इसका क्या प्रयोजन है?

+इस विषय में श्री पं० शिव शङ्कर जी शर्मा की बनाई हुई "वैदिक इतिहासार्थ निर्णय" नामक पुस्तक जो आ० प्र० नि० सभा लाहौर से मिलती है अवश्य ही देखनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर = इसका प्रयोजन यह है कि ईश्वरीय ज्ञान में कोई बात ऐसी न हो जो कि सृष्टि नियम से विरुद्ध और असम्भव हो। जैसे हज़रत मुहम्मद साहिब ने चांद के दो टुकड़े कर दिये और हनूमान ने पैदा होते ही सूर्य्य को मुंह में रख लिया। या कोई कहे कि अमुक मनुष्य आंख से बोलता नाक से देखता और कान से रोटी खाया करता था। या जिसमें लिखा हो कि परमात्मा बाग़ों की सैर करता तथा समय पर जन्म भी लेता रहता है। इस प्रकार की बातें सृष्टि नियम से बाहर और असम्भव हैं। परमात्मा सर्वज्ञ है। अतः उसके ज्ञान में (इलहाम में) भी कोई बात इस प्रकार की भी न होनी चाहिये। इस प्रकार से जो ऊपर ईश्वर ज्ञान के लक्षण किये गये हैं वे सर्वथा सत्य हैं। इन लक्षणों से लक्षित हो ग्रन्थ ईश्वरीय ज्ञान का [इलहामी] पुस्तक हो सकता है। मैं पहले कह चुका हूं कि इन लक्षणों से युक्त संसार में केवल वेद ही ईश्वरीय ज्ञान की रचना है। वेद शब्द से ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद चारों का ग्रहण है।

प्रश्न = क्यों जी वेदों को परमात्मा ने कब प्रकट किया है ?

उत्तर = आदि सृष्टि में। अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति में जब मनुष्यों की सृष्टि हुई तब वेद प्रकट किये गये हैं।

प्रश्न = सृष्टि को उत्पन्न हुए कितना समय बीत गया ?

उत्तर = इस सृष्टि को उत्पन्न हुए अब तक "एक अरब सत्तानवे करोड़ उन्तीस लाख उञ्चास हज़ार और पच्चीस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष [१९७२९४९०२५ वर्ष] हुये हैं। सो इतना ही समय वेदों को भी प्रकट हुए हुआ है।

प्रश्न = यह कैसे मालूम हुआ कि सृष्टि को उत्पन्न हुए इतने वर्ष हो गये हैं।

उत्तर = गणित शास्त्र के नियम से।

प्रश्न = सृष्टि की कुल आयु कितनी है?

उत्तर = चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष सृष्टि की आयु है [४३२०००००००]

प्रश्न = यह कैसे मान लें कि सृष्टि की आयु ४३२०००००००० वर्ष की है और इसमें से १९७२९४९०२५ वर्ष बीत भी चुके हैं? कई भाई तो कहते हैं कि दुनियां का शुरू हज़रत आदम से है और हज़रत आदम को हुये कुल ७००० वर्ष ही हुए हैं। सो क्या यह बात मिथ्या है?

उत्तर = संसार की उत्पत्ति के विषय में ७००० वर्ष का ख़याल हमारे मुसलमान भाइयों का है परन्तु यह बिलकुल मिथ्या है।

प्रश्न = क्यों मिथ्या है?

उत्तर = इसलिये कि सृष्टि की उत्पत्ति को तो १९७२९४९०२५ वर्ष हो गये हैं और ये कहते हैं कि कुल ७००० वर्ष ही हुए हैं संसार में सैकड़ों ही मत मतांतर हैं जिनमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सृष्टि की उत्पत्ति तथा आयु के विषय में भिन्न २ विचार हैं क्योंकि वेद के अतिरिक्त जितने भी मत मतांतर हैं, सब आधुनिक और मनुष्यों के चलाये हुये हैं, इसलिये उनके कथन में बहुत कुछ ग़लतियां हैं और इसी कारण सृष्टि की आयु के विषय में भी ग़लत ही विचार किया गया है।

प्रश्न = संसार में कुल कितने मत मतांतर या धर्म हैं ?

उत्तर = संसार के सब मत मतांतरों की संख्या का ठीक २ पता लगा लेना तो बड़ा ही कठिनतर है परन्तु फिर भी अनेकशः पुस्तकों के देखने और विद्वानों के द्वारा यह मालूम किया जा सका है कि इस समय संसार भर में ६० हज़ार से अधिक या लगभग एक लाख मत मतांतर हैं। इनमें से जिनका वृत्तांत मुझे मालूम होसका है उनकी सूचि मात्र ही नीचे लिखता हूं और इन मत मतांतरों का वास्तविक हाल इस पुस्तक के दूसरे भाग में लिखने का यत्न करूंगा।

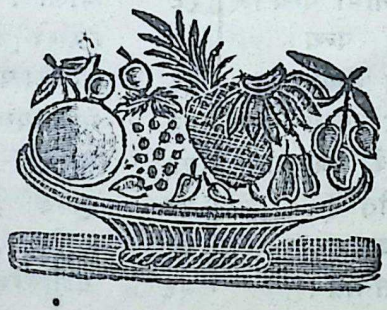

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार के मत मतान्तरों की सूचि,

सन् १९२५ ईस्वी के शुरू में कितने वर्ष हुए हैं सो लिखते हैं।

संख्या	नाम	संख्या	नाम
१	चावाक धर्म ४३६३ वर्ष का	१२	दत्ता त्रेत्र पन्थ।
२	जैन धर्म ३४९१ साल से कुछ अधिक का है	१३	लिंगायत पन्थ।
३	बौद्ध धर्म २४४६ वर्ष	१४	योगी मार्ग।
४	पौराणिक धर्म १५०० से १८०० वष तक का है।	१५	नाथ पन्थ।
५	शेष सम्प्रदाय १५०० साल का,	१६	शाक्त सम्प्रदाय।
६	अलख नामी पन्थ।	१७	बाम मार्ग तथा बाम मार्ग के भेद इस प्रकार से हैं।
७	अवधूत पन्थ।	२०	श्रीचक्र जिसे पूर्णाभिषक भी कहते हैं[१]
८	आकाश मुखी पन्थ	१९	चोली पंथ [२]
९	रसेश्वर पन्थ—इस पन्थ के अनुयायी शैवी होते हैं	२०	कश्रारी [अघोरी] [३]
१०	प्रत्यभिज्ञा	२१	शीतला पन्थी [४]
११	पाशु पत मत।	२२	मार्गी पंन्थ ५
		२३	माता ,, ६
		२४	कूण्डा ,, ७
		२५	शांति ,, ८
		२६	वशीकरण ,, ९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२७ स्तम्भन ,, १०
२८ विद्वेषी ,, ११
२९ उच्चाटन ,, १२
३० मारण ,, १३
इत्यादि इसके बहुत
भेद हैं जिनका ठीक२
पता लगना कठिनतर
हो है।
३१ वैष्णव सम्प्रदाय
३२ शुद्धाद्वैत, पुष्टिमार्ग]
३३ विशिष्टा द्वैत [श्री
सम्प्रदाय]
३४ संयोगी पंथ
३५ निहङ्गी ,,
३६ रामानन्दी सम्प्रदाय
३७ निर्वाणी मत
३८ खाकी मत
३९ संतोषी मत
४० निर्मोहीमत
४१ बलभद्री मत
४२ टाटम्बरी मत
४३ दिगम्बरी मत
४४ मध्वाचारी सम्प्रदाय
४५ निम्बार्क ,,
४६ चैतन्य ,,
४७ स्पष्टदायक ,,
४८ बाहुल ,,
४९ प्याड़ा ,,
५० सहजी ,,
५१ गौरांग सेवक
५२ दरवेश पन्थ
५३ कर्त्ता भक्त ,,
५४ राम वल्लभी ,,
५५ साहेब धनी ,,
५६ सहज कर्त्ता भक्त ,,
५७ विश्वासी ,,
५८ जग मोहनी ,,
५९ सत्कुली ,,
६० अनन्त कुली ,,
६१ पागल नाथी ,,
६२ दर्प—नारायणी ,,
६३ तिलकी दासी सम्प्र-
दाय
६४ अति बड़ी
६५ कबीर पन्थ
६६ सत नामी
११ इस प्रकार इस पन्थ
के भी अनेक भेद हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७७	११ अन्य भेद हैं।		९८	बहानी	
७८	सिक्ख सम्प्रदाय		९९	हनफ़ी	९
७९	उदासी ,,		१००	सुफी	१०
८०	कूका पन्थी ,,		१०१	बहाबी	११
८१	गांजा भद्दी ,,		६२		६२
८२	सुथी याही ,,				७२
८३	निर्मली ,,		१६३		
८४	रामरायो ,,		१६४	पौराना-पन्थ	
८५	मान भाव पन्थ		१६५	क्रिश्चियन धर्म और इसके भेद	
८६	यहूदी धर्म [मत]		१६६	प्रोटे स्टेण्ट	
८७	बनी इसराइल		१६७	रोमन कैथोलिक	
८८	जर थोस्तो धर्म (पारसीमत)		१६८	ग्रीक आदि २५० केलग भग ईसाई धर्म के पेटा पन्थ भेद हैं।	
८९	सेवियन मत		२४६		
९०	इस्लाम मत और इस के प्रधान ७३ भेद		४१४		
९१	दाउदी बहोरा	१	४१५	इलाहोमत	
९२	इमली पन्थ	२	४१६	खोजड़ा या प्रणामी पंथ	
९३	मेधा विया	३	४१७	उद्धविया स्वामी नारायण का सम्प्रदाय	
९४	मोरे स्लाम	४	४६८	राधास्वामी मत	
९५	आवासो	५	४१९	रयदासो ,,	
९६	इस्माइली (आगाखानी	६	४२०	सेन पन्थो ,,	
९७	महोदीय	७	४२१	मलूक दसो ,,	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४२२ दादू पन्थी
४२३ आचारी पन्थ
४२४ मीरापन्थ मत
४२५ राधावल्लभी मत
४२६ सखी भाव पन्थ
४२७ जानकीदास ,,
४२८ सन्तराम' ,,
४२९ षड्दर्शनो ,,
४३० पल्टूदासी ,,
४३१ आपापन्थो ,,
४३२ बीज मार्गी ,,
४३३ निरञ्जन मत
४३४ इ उर्वदो पन्थ
४३५ विट्ठल भक्त का पन्थ
४३६ चरणदासो पन्थ
४३७ अनन्त पन्थो मत
४३८ आदि वाराहोपासक पंथ
४३९ बाबा लाल का ,,
४४० कुबेर भक्त ,,
४४१ दादूराम पन्थ यह पन्थ दादू पंथ से भिन्नहै
४४२ कार्मोलिन मत
४४३ कृष्ण राम ,,
४४४ खण्डावा उपासक ,,
४४५ विष्णु पंथ
४४६ समर्थ सम्प्रदाय
४४७ चक्राङ्कित मत
४४८ रामसनेही पन्थ
४४९ रामदेव मत
४५० हरिश्चन्द्रो ,,
४५१ सधन पन्थो मत
४५२ माधवो पन्थ
४५३ चूहड़ पन्थो मत
४५४ हरिव्यासो मत
४५५ रामप्रसादो पन्थ
४५६ लशकरो मत
४५७ चतुर्भुजो पन्थ 'शिव धर्म को शखाय'
४५८ दशनामो
४५९ दण्डो
४६० हंस
४६१ परमहंस
४६२ कुटी चक्र
४६३ बहुत्युक्,
४६४ कड़ालिङ्गो
४६५ उर्ध्व बाहु
४६६ योगी
४६७ अब धूत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४६८ नागा
४६९ अलखनामी
४७० अघोरी
४७१ दङ्गली
४७२ फलाहारी
४७३ दूधाधारी
४७४ सौर सम्प्रदाय
४७५ गणपति उपासक पंथ
४७६ ब्रह्म समाज
४७७ भारतवर्षीय ब्रह्म समाज
४७८ आर्यन ब्रदरहुड
४७९ सत्यशोधक समाज
४८० देव समाज
४८१ रामकृष्ण मिशन
४८२ स्वामी रामतीर्थ का वैदिक मत
४८३ श्रेयसाधक अधिकारी वर्ग मत
४८४ प्रियतम धर्म सभा
४८५ थियोसोफिकल सोसायटी
४८६ आनन्द सभा
४८७ फीमैसन (यह गुप्त मत है)
४८८ हेमराजी मत
४८९ राम नवाजी मत
४९० साधारण ब्रह्म समाज
४९१ सन्तमता पन्थ
४९२ शिरोटे धर्म। और इसकी १३ शाखायें जा-
१३ पान में प्रचलित हैं
५०५ तथा इसी प्रकार जा-
१२ पान में बौद्ध धर्म की
५१७ भी १२ शाखायें हैं,
५१८ शिवनारायणी मत

इत्यादि बहुत से मतमतान्तर हैं। परन्तु इन में से कोई भी ईश्वरीय ज्ञान के लक्षण से युक्त नहीं है। सब के सब समय २ के संशोधक महाशय-महा पुरुष या स्वार्थी टकापन्थीसांसारिक मनुष्यों के ही चलाये हुए हैं। केवल मात्र वेद संहितायें ही ऐसी हैं कि जो किसी मनुष्य की कृति (बनाई हुई) नहीं हैं। और ईश्वरोक्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न—हां आप से यह पूछा था कि वेदों को प्रकट हुए कितने वर्ष हुए हैं सो ठीक २ बताइये न ?

उत्तर=प्यारे भाई ! मैं इस का उत्तर देचुका हूं कि गणित शास्त्र के नियम से सृष्टि तथा वेदों को प्रकट (उत्पन्न) हुए अब तक १९७२९४९०२५ वर्ष व्यतीत होगये हैं और जिन मत-मतान्तरों ने ७००० या इस से न्यूनाधिक उपरोक्त संख्या से विरुद्ध लिखा है, वह सर्वथा ही मिथ्या है। क्योंकि वेद सृष्टि की आदि में हुए हैं और सृष्टि को व्यतीत आयु पर वर्तमान विज्ञान (साईंस) ने भी बहुत कुछ अनुभवात्मक अनुसन्धान करके मतवादियों को बताई हुई सृष्टि उत्पत्ति की संख्या को रद्द करके संसार को बता दिया है कि संसार की उत्पत्ति को करोड़ों वर्ष ही मानना उचित है। इस विषय में थोड़े से विद्वानों के विचार आप को बतलाता हूं। कृपया इन को ध्यान से विचारिये।

वर्तमान विज्ञान वेत्ताओं के अनुभव में सृष्टि की आयु

एक करोड़ वर्ष (१००००००)

प्रोफेसर एस० न्यु० कोम्ब साहिब ने लिखा है कि जब से पृथिवी ठण्डी होकर बनस्पति के उगने योग्य हुई है तब से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब तक कम से कम १०००००० वर्ष हुए होंगे देखो पापुलर आष्ट्रो नोमी। पृ० ५०६ पर।

२ करोड़ वर्ष।

प्रो० हिलनार साहिब कहते हैं कि "जब से भूमि ठण्डी होकर बनस्पति के उगने योग्य हुई है तब से अब तक न्यून से न्यून २०००००० वर्ष हुए होंगे। देखो सोक्रिट डाक्टरिन जि० २ पृ०६१४।

७ करोड़ वर्ष।

प्रो० काल साहब कहते हैं कि "धरती के शीतल होने से इस दशा को पहुंचने के लिये ७०००००० वर्ष अवश्य चाहियें। देखो क्लाइमेट इन टाइम पृ० ३३५।

१६००२४२३ वर्ष।

चीनी लोग अनुमान करते हैं कि संसार की प्रथम राज सत्ता से कनक्यूशस उन के व्यवस्थापक तक जो कि मसीह से ५०० वर्ष पूर्व हुआ है। १६००२४२३ वर्ष हुए होंगे। देखो बकी अहिन्दुस्तान पृ० ७ से १२ तक।

८८८४००१३ वर्ष।

तारीख़ ख़ताई से सृष्टि की प्रथमोत्पत्ति ऐतिहासिकों के प्रमाणानुसार अब तक ८८८४००१३ वर्ष मालूम हैं। देखो १८६७ कलकत्ते के छपे हुए आईने अकबरी के पृ० २३७ पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० करोड़ वर्ष

" सर विलियम टामसन " साहिब ने कहा है कि पृथिवी के शीतल होकर बनस्पति के उगने योग्य होने और उस समय से इस समय तक अनुमान १००००००० वर्ष बीते होंगे। देखो सोक्रेट डाक्टरिन ज़ि० २ पृ० ६१४।

३० करोड़ वर्ष।

एक और ऐतिहासिक महाशय कहते हैं कि आरम्भ से जब तक बनस्पति आदि बनती रही और उस समय से मनुष्यों के उत्पन्न होने तक ३००००००० वर्ष चाहियें। देखो सीक्रेटडाक्टरिन जि० २ पृ० ६१ लण्डन छापा।

३५ करोड़ वर्ष।

प्रो० " निशचाफ़ " महोदय कहते हैं कि २००० डिगरी की गर्मी से २०० डिगरी की गर्मी तक पहुंचने के लिये ३५०००००० वर्ष बीते होंगे इस से कम नहीं।

देखो = सीक्रेट डाक्टरिन छापा लण्डन पृ० ६१४ पंक्ति २२।

५० करोड़ वर्ष।

प्रो० " रेड महाशय कथन करते हैं कि " जब से यूरोप में बनस्पति आदि की उत्पत्ति आरम्भ हुई तब से अब तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५००००००००० वर्ष बीते होंगे। देखो उनका व्याख्यान जो उन्हों ने सन् १८७६ ई० में भूतत्व परिषद् में दिया था।

१ अरब वर्ष।

सुप्रसिद्ध भूतत्व विद्या विशारद प्रो० हक सले ने यह बात पूर्ण अनुसन्धानके पश्चात् निश्चित प्रमाण तक पहुंचा दी है कि जबसे सृष्टि में वनस्पतिकी उत्पत्ति आरम्भ हुई है तब से अब तक १००००००००० वर्ष बीते होंगे। देखो वले लाईफ़ पृ० १८७ पर।

१ अरब ६० करोड़ वर्ष।

अब सुना है कि एक किसी विज्ञानी महोदय ने कहा है कि पृथिवी की बहुत सी वस्तुवें ऐसी हैं कि जिनको ऐसी कठोर बनावटके लिये कमसे कम १६००००००००वर्ष अवश्य ही बीते होंगे। इस प्रकार मतवादियों को बताई सृष्टि उत्पत्तिकी ७००० हज़ार आदि संख्याको तो विज्ञानवेत्ताओंने ही ग़लत कर दिखाया है। उपरोक्त जितने भी मतमतान्तर हैं किसी में भी यह साहस नहीं है कि विज्ञान के सामने यह कह सकें कि संसार की उत्पत्ति को अधिक न होकर केवल ७००० वर्ष ही हुए हैं।

प्रश्न—वर्तमान विज्ञान का सृष्टि उत्पत्ति के विषय में अब तक जो विचार (सिद्धान्त) प्रकट किया गया है वह अनि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्चित और निराधार है लोग अटकल पच्ची से यूं ही अंड बंड कह देते हैं कि दुनियां को बने हुए इतना इतना समय हुआ है। साईंस वालों की ऐसी बातें केवल मनके लड्डू खाने के सदृश हैं। उनके पास क्या सबूत है कि सृष्टि को उत्पन्न हुए १ अरब तथा ६० करोड़ वर्ष हो होगये हैं और हमारे माने हुए ७ हज़ार या १० हज़ार वर्ष ग़लत हैं? इस लिये जब तक कोई पक्की बात (दृढ़तर प्रणाम) सामने न आवे तब तक सृष्टि की उत्पत्ति के ७ या १० हज़ार को ग़लत और १ अरब ६० करोड़ वर्ष को सही कहना सर्वथा ही अनुचित है।

उत्तर= प्यारे भाई साहिब! विज्ञान वेत्ताओं ने सृष्टि की आयु को यूं ही आप के सामने नहीं रख दिया है बल्कि उन्हों ने वर्षों तक इस विषय में बड़ा अन्वेषण किया है उन्हों ने जो समय निर्धारित किया है उसे सिद्ध करने के लिये उनके पास पुष्कल युक्ति तर्क और पदार्थ मात्र की रचना विद्यमान है। विज्ञानियों ने कहा है कि इतने वर्षों से कम नहीं हुए हैं। हां यह ठीक है कि (साईंस—दां) विज्ञान वेत्ता अब धीरे २ संस्कृत साहित्य और वेद की ओर आरहे हैं और एक दिन वह आयेगा जब कि वेद और सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में वे लोग भी हमारे साथ मिल कर तथा गद गद हो के यह कह उठेंगे कि हां सृष्टि की कुल आयु ४३२०००००००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष को है और उसमें से अब तक १९७२९४९०२५ वर्ष बीत भी चुके हैं। महाशय! यदि आप विज्ञान की इस बात को प्रमाणिक न भी मानें तब भी आप के ७ या १० हज़ार वर्ष तो कपूरवत् (मानिन्द क़ाफ़ूर) के विज्ञान के वायु मण्डल में उड़कर सदा के लिये छिन्न भिन्न हो हो जाते हैं।

यदि थोड़ी सी देर के लिये हम आप की यह बातें मान भी लें कि वर्तमान विज्ञानियों ने सृष्टि उत्पत्ति के काल को अटकल पच्चू ही बतादिया है और इस लिये वह असत्य है तब भी संसार के प्रसिद्ध प्रचलित सम्वतों को वर्ष संख्या से ही आप अपने जीर्ण, वृद्ध, टूटे, फूटे, ७ या १० हज़ार वर्ष के ख़याली खटोले सहित उड़ही तो जाते हैं।

देखिये संसार के प्रसिद्ध २ प्रचलित सम्वत् और इनकी वर्ष संख्या। इनकी संख्या तो मन घड़न्त नहीं है।

संसार के प्रचलित प्रसिद्ध २ सम्वत्

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०२५ वर्ष यह सम्वत् सृष्टि को आदि से चला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२ आर्य्य या वैदिक १९७२९४९०२५ वर्ष यह सम्वत् सृष्टि की आदि से चला है।

३ चीनी सम्वत् ९६००२४२४ वर्ष यह सम्वत् चीन के प्रथम सम्राट से चला है।

४ पारसी सम्वत् १८९८९४ वर्ष यह सम्वत् ईरान के प्रथम सम्राट से चला है।

५ खताई सम्वत् ८८८४०२९७ वर्ष यह सम्वत् ख़ता नगर के प्रथम बसाने वाले से चला है।

६ कालडिया सं० १५,९२४ वर्ष। यह स० प्रधान पुरुषा से

७ मिसरी „ १७५७८ „ „ मिसर के प्रथम सम्राट से

८ इबरानी सम्वत् ५१२८ वर्ष आदम एवं संसार की उत्पत्ति से

९ कलियुग सम्वत् ५०२५ वर्ष कलियुग के आरम्भ से

१० युधिष्ठरी सम्वत् ५०२५ वर्ष राजा युधिष्ठर के राज्याभिषेकोत्सव से

११ नूंहका सम्वत् ५० २४ साल नूंह के समय से

१२ इब्राहीमी „ ३८४५ वर्ष इब्राहीम से

१३ स्पार्टा „ ३६२८ „ स्पार्टा नगर की नींव से

१४ मूसवी „ ३४९७ „ ह० मूसा के समय से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५ दाऊदी ,, २९५१ ,, हज़रत दाऊद के समय से
१६ यूनानी ,, २७०० ,, ओलम्बिया के अखाड़े से
१७ रूमी ,, २६७८ ,, रूम नगर की नींव के दिन से
१८ नाबूसारी ,, २६७१ ,, बाबुल प्रथम सम्राट के राज्याभिषेकोत्सव से
१९ बौद्ध सम्वत् २४९८ वर्ष । बुद्धको ५० वीं जन्मगांठसे
२० सिकन्दरी ,, २२७८ ,, सिकन्दर सम्राट के जन्म से
२१ विक्रमी ,, १९८१ ,, विक्रमके राज्याभिषेकोत्सव
२२ ईस्वी ,, १९२५ ,, ईसाके जन्मके ४ वर्ष बाद से
२३ शालिवाहन ,, १८३६ ,, राजा शालिवाहन से
२४ मुहम्मदी ,, १३४२ ,, हज़रत मुहम्मद साहिब जब मक्का से मदीना को गये तब से चला है।

इस प्रकार के सम्वतों को देखने से ज्ञात होता है कि वर्तमान विज्ञान वेत्ताओं ने सृष्टि उत्पत्ति के समय का जो अनुमान लगाया है उसमें बहुत कुछ सच्चाई है । और इन सम्वतों से ज्ञात होता है कि सृष्टि की आयु १।७ या १० हज़ार वर्ष आदि बताने वाले भाइयों ने सर्वथा पक्षपात और अंध विश्वास से ही काम लिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्त्तमान

विज्ञान वेत्ताओं के १ अरब ६० करोड़ वर्ष के अनुमान को तो आप इस लिये भी छोड़ सकते हैं कि यह केवल अनुमान मात्र है और कोई वास्तविक निर्णीत गणितादि शास्त्र के अनुकूल नहीं है परन्तु हमारे प्राचीन विज्ञान वेत्ताओं ऋषि मुनियों के जो सृष्टि उत्पत्ति और वेदों के प्रकट होने का १९७२९४९०२५ वर्ष बतायें हैं उसका साथ में हिसाब भी दिया है। अन्धा धुन्धी तथा पक्षपात को छोड़ कर शान्ति से सुनिये और मनन कीजिये।

१९७२९४९०२५ वर्ष का हिसाब

४ युग

(१) सत्ययुग	१७२८०००	वर्ष का
(२) त्रेता युग	१२९६०००	,, का
(३) द्वापर	०८६४०००	,, ,,
(४) कलियुग	०४३२०००	,, ,,
कुल योग=	४३२००००	वर्ष

का १ चतुर्युग होता है।

और इस प्रकार के ७१ चतुर्युगों का १ मन्वन्तर होता है जिसके कि ३०६७२०००० वर्ष होते है। यथा=

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युगानां सप्ततिः सैकामन्वन्तर मिहोच्यते। कृताब्द सङ्ख्यया तस्यान्ते, सन्धिः प्रोक्तो जलप्लवः ॥

अर्थ=एक हत्तरयुग का एकमन्वन्तर होता है जिसके अंत में कृतयुग (सत्ययुग) के बराबर १ सन्धिकाल होता है उसी सन्धिकाल में जल प्लव (बाढ़) होता है।

सूर्य्य सिद्धान्त प्रथम अध्याय श्लोक १८ पृ० ११।

ससन्धयस्ते मनवः कल्पेज्ञेया—श्चतुर्दश।

कृत प्रमाणः कल्पादौसन्धिः पञ्चदशः स्मृतः ॥ १९ ॥

अर्थ=कल्प में सन्धि के साथ १४ मनु होते हैं। कल्प की आदि में कृतयुग प्रमाण की १ सन्धि होती हैं अर्थात् १ कल्प में १४ मनु और १५ सन्धियां होती हैं। सू० सि० अ० १। श्लोक १९ ॥

१४ मन्वन्तरों के नाम

(१) स्वायम्भव मनु	३०६७२०००० वर्ष
(२) स्वारोचिष	,, ,,
(३) औत्तमि	,, ,,
(४) तामस	,, ,,
(५) रैवत	,, ,,
(६) चाक्षुष	,, ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७) वैवस्वतमनु ,, ,,

(८) सावर्णि ,, ,,

(९) दक्षसावर्णि ,, ,,

(१०) ब्रह्म सावर्णि ,, ,,

(११) धर्म सावर्णि ,, ,,

(१२) रुद्रपुत्र ,, ,,

(१३) रौच्य ,, ,,

(१४) भौत्यक ,, ,,

इन १४ मन्वन्तरों को मिला कर

कुल योग = ४२९४०८०००० वर्ष,

होते हैं और १५ सन्धियों के २५१२०००० वर्षों को मिलाने से कुल ४३२०००००० वर्ष होते हैं जिस का नाम कल्प है। इतनी सृष्टि की आयु है और इतनी ही प्रलय काल की संज्ञा है। इसको ब्रह्मा का दिन और रात भी कहते हैं।

सूर्य सिद्धान्त अ० १ श्लोक सं० २२ में लिखा है कि =

"कल्पा—दस्माच्च मनवः षड्व्यतीताः ससन्धयः ।
वैवस्वतस्य च मनोर्युगानां त्रिघनोगतः ॥ २२ ॥

अर्थ = कल्प के आदि से लेकर वैवस्वत मनु से पहिले २ सन्धियों सहित ६ मन्वन्तर (जिन के नाम ऊपर लिख चुके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं) बीत चुके हैं और ७ वें इस वेवस्वत मनु के भी २७ युग बीत चुके हैं ॥ २२ ॥

इस श्लोक से ज्ञात होता है कि यह ग्रन्थ सूर्य सिद्धान्त त्रेतायुग के आदि में ही लिखा गया है और इस प्रकार से इस ग्रन्थ को बने हुए कम से कम २१६५०२५ वर्ष अवश्य ही होगये हैं। इतने पुराने ग्रन्थ के आधार पर (जो कि ज्योतिः शास्त्र का सर्वोपरि माननीय ग्रन्थ है) यह भलि भाँति प्रकट होरहा है कि संसार की उत्पत्ति को १९७२९४९०२५ वर्ष होगये हैं। अब तक ६ मन्वन्तर और ७ सधियां तथा ७ वें मन्वन्तर के २७ चतुर्युग और २८ वें चतुर्युग के सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापर और कुछ काल कलियुग का बीत गया है। यथा:— १७२८००० वर्ष की १ संधि होती है : अतः—१२०९६००० वर्ष सात संधियों के इतने वर्ष हुए। और १ मन्वन्तर के ३०६७२०००० वर्ष होते हैं इस लिये। ६ मन्वन्तरों के

१८४०३२०००० वर्ष हुए।

और २७ चतुर्युगों के—११६६४००० वर्ष होते हैं सब के जोड़ने पर।

६ मन्वन्तरों के	१८४०३२००००	वर्ष
७ सन्धियों के	००१२०९६०००	वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२७ चर्तु युगों के	०११६६४००००	,,
सत्ययुग	०००१७२८०००	,,
त्रेता	०००१२९६०००	,,
द्वापर	००००८६४०००	,,
कलियुग	०००००५०२५	,,
कुल योग	१९७२९४९०२५	

वर्ष सृष्टि के उत्पन्न और वेदोंके प्रकट हुए को हुए हैं। और इससृष्टि के प्रलय होने के अभी २३४७०५०९७५ वर्ष भोग के शेष हैं। जब इतने वर्ष भी वीत जायेंगे तब इस सृष्टि का संहार (प्रलय) हो जायेगा, और ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष तक प्रलय अवस्था में रहकर फिर उत्पत्ति की दशामें आयेगी।

इसी प्रकार सृष्टि को आयु का मनुस्मृति अ० १ में श्लोक सं० ६९ से ८० तक में भलि भांति विचार किया गया है।

सारांश में यह सिद्ध हुआ कि इस सौर मण्डल की सृष्टि को उत्पन्न हुए १९७२९४९०२५ वर्ष व्यतीत होगये हैं और आदि सृष्टि में ही ईश्वरीय ज्ञान का प्रकट होना अत्यावश्यक है अतः "वेदों को" (ईशवरीय ज्ञान को) प्रकट हुए भी इतने ही वर्ष व्यतीत होगये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस विस्तृत विश्व में इस प्रकार के जितने भी सौर मण्डल हैं उन सब की आयु का यही हिसाब है अर्थात् प्रत्येक सौर मण्डल (जिसमें अनेक पृथिवी और चन्द्र सम्मिलित हैं) की ४३२०००००० वर्ष की ही उत्पत्ति और इतने ही वर्षों की प्रलय अवस्था है।

विशुद्ध, विस्तृत, विकाशवान्, पवित्र मस्तिष्क वाले महा पुरुषों ने (ऋषि मुनियों ने) अपने निर्भ्रान्त विज्ञान के प्रकाश में ज्ञान नेत्रों से सम्पूर्ण ब्रह्मांड (जिस में अनेकशः सौर मण्डल भरे पड़े हैं) भली भांति देख तथा इसके वास्तविक स्वरूप को जान संसार को यह भी बता दिया है कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड की कितनी आयु है और उस में से अब तक कितनी व्यतीत होगई है। सूर्य सिद्धांत अ० १ श्लोक संख्या २१ को देख कर विचारिये फिर आप को पता लगेगा कि इस विश्व के स्वरूप को जानने के लिये तपस्वी वेद एवं ईश्वर भक्त ऋषि मुनियों ने कितना बड़ा यत्न किया है। यथा

"परमायु शतं तस्य तया होरात्र संख्यया।
आयुषोऽर्द्ध मितं तस्य शेषकलपोऽय मादिमः॥
सू० अ० १ श्लोक २१॥

अर्थ—आह्न अहो रात्र की संख्या से ब्रह्मा की परम आयु [सम्पूर्ण आयु] शत वर्ष की है जिसमें से आधी आयु बीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई है और यह कल्प द्वितीयार्द्ध का पहिला दिन है॥ इसका भावार्थ यह है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की आयु ब्रह्मा के १ सौ वर्ष की है।

"ब्रह्माण्ड की आयु"

८ अरब ६४ करोड़ वर्ष का ब्रह्मा का एक दिन रात। ऐसे ३० दिन का एक महीना और ऐसे ऐसे १२ महिनों का एक वर्ष इस प्रकार के सोवर्ष जब होंगे तब सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की आयु होगी।

१ दिन रात—	८६४००००००	वर्ष
१ मास	—२५९२००००००००	,,
१ वर्ष	—३११०४००००००००	,,
सौ वर्ष	—३११०४०००००००००	,,

इसी संख्या का नाम १ परान्त काल भी है।

इतने वर्षों में से अब तक १५५५२०१२५३३०२५ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। यह उत्पत्ति प्रकरण वश ब्रह्माण्ड की आयु और भुक्त आयु का संकेत आपके सन्मुख आगया है। वास्तव में मेरा तो इतना ही प्रयोजन है कि वेदों को प्रकट हुए इतना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय व्यतीत हो चुका है और सन्सार में ४ मूल वेद संहिता ग्रन्थ मात्र ही ऐसे हैं कि जो ईश्वरोक्त हैं। (इलहामी हैं) शेष सैंकड़ों हज़ारों जो मतमतांतर हैं।

वे सब मन घड़न्त सांसारिक मनुष्यों की रचना मात्र है। वेदों का ही मानना मनवाना आर्य समाज का मुख्य मन्तव्य है और यही बात महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने संसार के सामने रखी है।

आर्य समाज कोई नया मत नहीं है

कई पक्षपाती और अज्ञानी मनुष्य कह दिया करते हैं कि स्वामी दयानन्द जी का चलाया हुआ आर्य्य समाज भी एक मत है परंतु यह उनकी भूल है। महर्षि स्वामी दयानंद जी ने अपनी ओर से कोई नया पंथ नहीं खड़ा किया है परञ्च उन्हों ने यही कहा है कि मनुष्यों का धर्म वेद है। वेद को मानो इसी से तुम्हारा कल्याण होगा। आर्य्य समाज के माननीय ग्रन्थों और महर्षि स्वामी दयानन्द जी के ग्रन्थों में एक भी बात ऐसी नहीं है कि जो वेद शास्त्र विरुद्ध और अपनी ओर से बनाई या लिखी गई हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारांश में यह है कि आर्य्य समाज जिस धर्म को मानता है वह वेद है। जो किसी मनुष्य की कृतिनहीं है बल्कि ईश्वरीय ज्ञान है और आदि सृष्टि में प्रकट हुआ है। जिस को प्रकट हुए १९७२९४१०२५ वर्ष होचुके हैं। इतना पुराना संसार में वेद के अतिरिक्त कोई ग्रंथ और धर्म नहीं है। मैंने आपके सामने यह प्रकट और सिद्ध करने का पूर्ण यत्न किया है कि आर्य समाज का मन्तव्य कोई नयामत या पन्थ नहीं है। आ० स० का धर्म वेद है और वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद आदि सृष्टि में प्रकट हुआ है जिस का कि हिसाब भली प्रकार से ऊपर दिया जा चुका है।

श्री भगवान दयानन्दर्षि का उपकार

जब कि लोग मन घड़न्त मत मतान्तरों के नशे में मस्त होकर संसार में अन्धा धुन्धो मचा रहे थे और यह भी पता नथा कि हम कौन और हमारा वास्तविक धर्म कर्म क्या है। लोग भागवतादि पुराणों को ही वेद मान बैठे थे—उस समय ऋषि ने आकर हमारे सामने वेद के स्वरूप को प्रकाशित किया है। इस विषय में ऋषि का सन्सार पर बड़ा भारी उपकार और ऋण है। स्वामी दयानन्द जी वेदों के परम विद्वान् और पूर्ण भक्त थे। उन्होंने वेदों का भाष्य करके सन्सार को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बता दिया कि वेद क्या हैं। और वेदों का अर्थ (भाष्य) किस प्रकार का होना चाहिये। स्वामी जी से पहिले जिन्होंने वेद भाष्य किये हैं उन लोगों ने वेदों को ऐसा दूषित किया है। कि जिससे विचार वान् पुरुष घृणा कर बैठे थे। आप उनके भाष्य के साथ २ ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य को जब देखेंगे तब पता लगेगा कि ऋषि ने कितना बड़ा उपकार किया है। वेदों में क्या है। और ऋषि दयानन्द ने क्या किया है। यह विषय तो एक स्वतन्त्र भिन्न विषय है। इस पर फिर कभी लिखा जावेगा। परन्तु जिस ऋषि ने वेद के सम्बन्ध में इतना काम किया है आज उस ऋषि को उत्पन्न हुए पूरे सौ वर्ष होचुके हैं आज आप और हम उस ऋषि की याद गार में यह "जन्म शताब्दी महोत्सव" मना रहे हैं। वास्तव में हम ऋषि की याद गार उसके बताये आदेश का पालन करते कराते हुए ही मना सकते हैं।

अतः प्यारे आर्य्य भाइयो! आप वेदों का स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञा करो और ऋषि के ऋण से उऋण बनने का यत्न करो। और ऋषि की इस आज्ञा को सार्थक करो कि "वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना रूप आर्य्यों का परम धर्म है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमात्मा हमें शक्ति दें कि जिससे हम ऋषि के इस आदेश को पूर्ण कर सकें। ओमिति

बोलो वैदिक धर्म की जय।

महर्षि स्वामी दयानन्द की जय॥

नोट—शीघ्रता में छपने के कारण यदि कोई भूल रह गई हो तो उससे सूचित करने की कृपा करें।

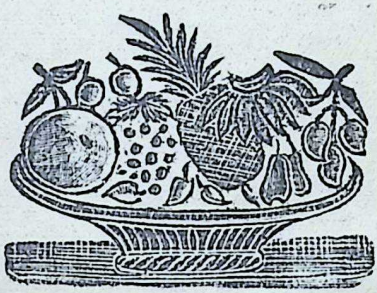

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना

(१) वेदाङ्ग—इस नाम की लघु पुस्तक (ट्रैक्ट) शीघ्र ही छपने वाली है। इस में वेद, उपवेद अंग उपाङ्ग और वेदों की कितनी शाखायें किस २ ग्रन्थ में कितनी २ लिखी हैं। यह सब सप्रमाण लिखा होगा। प्रत्येक आर्य्य पुरुष को पास में रखना उचित है।

(२) जीवन का आनन्द—इस पुस्तक में ब्रह्मचर्य काल में जीवन की रक्षा और स्वास्थ्य एवं वीर्य रक्षार्थ अनेक प्रकार के शास्त्रीय उत्तमोत्तम प्रयोग (नुस्खे) होंगे जिस से कि आप अनेक प्रकार विष युक्त औषधियों के विष सेवन से बच कर जीवन के आनन्द को प्राप्त कर सकेंगे।

यह पुस्तक स्त्री पुरुष दोनों के ही अत्यन्त काम की है। विशेष क्या कहें जीवन का आनन्द ही तो है।

(३) यज्ञोपवीत क्या है—इस में यज्ञोपवीत का अधिकार और तीन तारों का बहुत उत्तम प्रकार से वर्णन किया गया है। इस के देखने से आप को पता लगेगा कि यज्ञोपवीत क्यों पहनना चाहिये और इसके तीन तार क्यों हैं उपरोक्त पुस्तकें शीघ्र ही छपने वाली हैं।

मिलने का पता—
सुरेन्द्र शर्म्मा
काव्यतीर्थ
आर्य्योपदेशक
पुरोहित आर्य्य समाज
सर गोधा (पंजाब)

मास्टर लक्ष्मण के प्रबन्ध से स्टार प्रेस देहली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत पुस्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Entered in Database
Signature with Date
18/7/2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar